...अन्त में

हम सबला **का यह** अंक यौन व यौनिकता विशेषांक है। इस अंक में हमने इस विषय पर उपलब्ध विभिन्न विमर्शों, नज़रियों और बहसों को संकलित करके आपके समक्ष प्रस्तुत किया है। उद्देश्य है— यौन और यौनिकता की समझ गहरी करना। साथ ही महिलाओं व पुरुषों की इतरलिंगी, समलैंगिक यौनिकता, बहु-यौनिक पहचानों, विषमलैंगिकता, यौन नियंत्रण, सामान्य व असामान्य यौन, यौन हिंसा आदि व्यापक मुद्दों पर चर्चा की शुरुआत करना। इस अंक के ज़रिए हम उन सांस्कृतिक व सामाजिक व्यवहारों की भी बात करेंगे जो महिलाओं के यौनिक अधिकारों का हनन करते हैं।

यौन व यौनिकता के बीच एक महत्वपूर्ण फ़र्क़ है यौन जैविक और अचल माना जाता है तथा यौन शब्द का उपयोग एक 'क्रिया' या 'व्यवहार' के लिए होता है। यौनिकता एक काल्पनिक सिद्धांत है जिसमें शारीरिक, यौनिक, भावनात्मक व व्यावहारिक पक्ष मौजूद हैं। इसकी रचना उन तमाम तरीकों से होती है जिनसे हमारे अनुभव व जज़्बात व्यक्त होते हैं या जिनसे इस अभिव्यक्ति का नकारा जाता है। इस लिहाज़ से यौनिकता के नकारात्मक व सकारात्मक अर्थ होते हैं और इसकी जड़ें एक विशेष संदर्भ में मौजूद होती है।

यौनिकता की रचना हमारी भावनात्मकता यानी हम कौन व क्या हैं व समाज से हमारे रिश्ते से होती है। ये न सिर्फ़ यौनिक पहचान से जुड़ी है बल्कि इसमें यौनिक मानदण्ड, व्यवहार, बर्ताव, चाहत, अनुभव, यौनिक ज्ञान और कल्पना भी शामिल होती है जो विषमलिंगी व समलैंगिक संबंधों के तहत गढ़ी जाती है। लिहाज़ा यौनिकता का सिद्धांत जैविक व मनोवैज्ञानिक पक्षों के साथ-साथ यौनिक पहचान व व्यवहार के सामाजिक सांस्कृतिक आयामों से भी संबंद्ध है। चूंकि यौनिकता व्यक्तिगत व सामाजिक दोनों पक्षों से जुड़ी है इसमें सामाजिक भूमिकाएं, व्यक्तित्व, जेंडर व विचारों का भी समावेश होता है। यह समाज में मौजूद जेंडर व सत्ता संबंधों को समझने में भी कारगार साबित होती है।

यौन और यौनिकता दोनों के अनेक आयाम होते हैं- संबंधात्मक, मनोरंजन, शारीरिक, भावनात्मक, कामुक व आध्यात्मिक ये आपस में जुड़े होते हैं और इनको अलग नहीं किया जा सकता है। प्रजनन यौन क्रिया का एक पहलू मात्र है।

यौनिकता एक व्यापक तंत्र है जो कल्पना व चाहत को शरीर के साथ जोड़ती है। ये लिंग से परे स्वयं तथा लोगों के बीच में सम्प्रेषण का सबसे अंतरंग संबंध है। यह एक खुशनुमा, स्नेहशील, सृजनात्मक, मदहोश, कामुक व उमंग भरी पारस्परिक क्रिया है।

यौनिक व्यवहार व यौनिक कामना शारीरिक व सामाजिक प्रक्रियाएं हैं जो एक विशेष संदर्भ में परिभाषित की जाती है। हमारा समाज पितृसत्तात्मक है और इस सामाजिक परिप्रेक्ष में विषमलैंगिक व समलैंगिक दोनों संबंधों में असमान सत्ता संबंध देखने को मिलते हैं। इस सामाजिक पृष्ठभूमि में यौनिक शुचिता यानी कौमार्य को औरतों के लिए आवश्यक माना जाता है। वहीं

पुरुषों के लिए अनुभवशील होना महत्वपूर्ण होता है। औरतों को कमतर व नियंत्रण में रखने के लिए यौनिक अनभिज्ञता, कौमार्य उत्तेजना का अभाव जैसे "नैतिक" पैमाने बनाए जाते हैं। उनकी भूमिका केवल पुरुष आकांक्षाओं की संतुष्टि के सीमित दायरे में आंकी जाती है। नियंत्रण का एक ओर तरीका होता है यौन से संबंधित बातों के प्रति गोपनीयता और खामोशी। औरतें से अपेक्षित होता है कि वे स्वभाविक सामान्य यौनिकता की पैरवी करते हुए यौन व यौनिकता के विषय पर मौन रखें। औरतों के लिए यौन संतुष्टि आनंद और इच्छा जैसे विश्लेषण बेमानी समझे जाते हैं।

यौन व यौनिकता को प्रभावित करने वाली सामाजिक संरचनाओं में परिवार मुख्य होता है जहां एक बच्चा अंतरंगता, स्नेह, वैध, अवैध, धर्म, स्वभाविक, वर्जित, वर्ग आदि के संदर्भ में यौन व यौनिकता की अभिव्यक्ति के नियम सीखता है। इसी के साथ राज्य कानून व अन्य संरचनाओं को प्रभाव भी तय होता है। पुरुष यौनिकता का महत्व तथा जीवन में इसका उच्च दर्जा औरतों को छुटपन से ही घरों में समझा-सिखा दिया जाता है। इस परिप्रेक्ष में वे यौन हिंसा खामोशी से सहती हैं और इसे नियति मान लेती हैं।

हम सबला के माध्यम से हम यौन व यौनिकता से जुड़े इन तमाम पहलुओं को उजागर कर सकें और इस विमर्श को आगे ले जाएं यही हमारा प्रयास है। हमारा मानना है कि यौनिकता की स्वतंत्र अभिव्यक्ति व इसे साक्ष्य बनाने के लिए सामाजिक संरचनाओं तथा इनके स्थापित मानदण्डों को चुनौती देनी होगी। उम्मीद है आप सभी इस कोशिश में हमारा साथ देगें।

अपनी प्रतिक्रिया, नज़रिए, विचार हमें लिख कर अवश्य भेजें।

–जुही